ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

विषय: भारतीय- षड् ऋतव: / भारतीय छ: ऋतुएं

– अतुल सिंह, ९अ

वनानि कुसुमायन्ते प्रवाति मलयानिल: ।
वसन्ते कोकिलानां च कूजनं शोभनं परम् ।।

आत्मानं विद्धि

अंक ५८ मार्च २०२५ फाल्गुन मास , विक्रम संवत् २०८१
मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयास:

प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक भारतीय छह ऋतुएं

भारतवर्ष विविधता से भरपूर देश है जहाँ विभिन्न प्रकार की ऋतुएं अपने अनूठे रंग और स्वरूप के साथ हर वर्ष आती हैं । प्रत्येक मौसम पूरे वर्ष में अलग-अलग समय पर होता है और लगभग मौसम का औसत समय दो से तीन महीने तक का होता है । सभी ऋतुओं का प्रभाव भारतीय जीवन और संस्कृति पर गहरा होता है, प्रत्येक ऋतु अपने साथ कुछ खासियत और रंग लेकर आती है जो प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाती है । ऋतुओं की यह चक्रीय प्रक्रिया जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाती है । मौसम प्रकृति को नया जीवन देता है । मौसम भारतीय किसानों के लिए बेहद हितकारी एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसान लोग मौसम के हिसाब से ही अलग-अलग तरह की फसल उगाते हैं । हमारे देश में लगभग ७० प्रतिशत लोग किसान हैं। किसानों का ही प्रकृति और पर्यावरण का सौंदर्य बनाने में बहुत बड़ा योगदान है और हमें भी पेड़ और पर्यावरण को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए ।

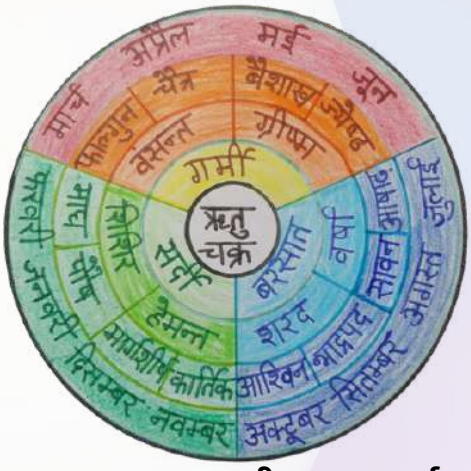

- खुशी कक्षा - चतुर्थ

भारतीय छः ऋतुएं प्राकृतिक सुषमा का उपहार ...

- आशिता चौहान ९अ

प्रकृति ने भारत को उन्मुक्त रूप से सौंदर्य प्रदान किया है। यहाँ पाई जाने वाली छः ऋतुएं क्रमशः आती हैं और अपना सौंदर्य लुटाकर देश के सौंदर्य में वृद्धि कर जाती हैं। ये ऋतुएं हैं - ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत। इनमें से प्रत्येक ऋतु का काल लगभग दो महीने का होता है। ग्रीष्म ऋतु का काल वैशाख और जेठ महीने हैं। इन महीनों में खूब गर्मी पड़ती है। इस समय दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। इस समय आम, लीची, अंगूर आदि फलों के अलावा खरबूजा, तरबूजा, खीरा, ककड़ी खाने का आनंद उठाया जा सकता है। वर्षा ऋतु का काल आषाढ़ और सावन महीने हैं। यह ऋतु धरती और प्राणियों को गर्मी की तपन से शीतलता प्रदान करती है। आसमान में काले बादल, चमकती बिजली, बरसता पानी और पानी में नाव चलाते बच्चे मन को हरते हैं। शरद ऋतु का काल भादो और क्वार महीने हैं। यह ऋतु अत्यंत प्रिय लगती है। इस समय चाँदनी रातें बड़ी ही शीतल और सुहावनी लगती हैं। दशहरा इसी ऋतु का प्रसिद्ध त्योहार होता है। हेमंत ऋतु का समय कार्तिक और अग्रहायण महीने हैं। इस ऋतु में सर्दी पड़नी शुरू हो जाती है। खेतों में फसलें पकने लगती हैं। रबी की फसलों की बुवाई का काम शुरू हो जाता है। दीपावली, भैया दूज, गोवर्धन पूजा, गुरु पूर्णिमा आदि प्रसिद्ध त्योहार इसी समय मनाए जाते हैं। शिशिर ऋतु का काल पौष और माघ हैं। इस समय भयंकर सर्दी पड़ती है। गरीबों के लिए यह ऋतु अत्यंत कष्टकारी होती है। वसंत ऋतु का काल फागुन और चैत महीने हैं। इसे ऋतुराज भी कहा जाता है। इस समय गर्मी और सर्दी न के बराबर होती है। यह ऋतु अत्यंत मोहक और उत्तेजक होती है। होली, वसंत पंचमी, रामनवमी आदि इस ऋतु के प्रसिद्ध त्योहार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सर्वोत्तम ऋतु है। इस समय समस्त प्राणी उल्लास एवं आनंद में डूब जाते हैं। पेड़ और लताएँ नए वस्त्र धारण कर लेते हैं। कलियाँ खिलकर फूल बन जाती हैं। सुगंधित हवा से वातावरण मादक बन जाता है। कोयल मतवाली होकर वसंत के स्वागत में कूकती फिरती है। विरहणियों को वसंत ऋतु अच्छी नहीं लगती है।

- कलिका त्रिवेदी ९ अ

सखि आयो वसंत रीतून का कंत चहू दिसि फूल रही सरसों।
पुनि शीतल मंद सुगंध समीर सतावन हार भयो गर सों ।।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द

सूक्तिमालिका

नैतिक शिक्षा तथा जीवनमूल्यों की शास्त्रीय बातें

१. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: - श्रीमद्भगवद्गीता
श्रेष्ठ पुरुष जो- जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा- वैसा ही आचरण करते हैं।

२. श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात् - श्रीमद्भगवद्गीता
अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है।

३. स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: - श्रीमद्भगवद्गीता
अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

४. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् - श्रीमद्भगवद्गीता
हे अर्जुन ! जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

५. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश: - श्रीमद्भगवद्गीता
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का समूह, गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है।

६. किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता: - श्रीमद्भगवद्गीता
कर्म क्या है ? और अकर्म क्या है ?- इस प्रकार इसका निर्णय करने में बुद्धिमान् पुरुष भी मोहित हो जाते हैं।

७. श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञ: परन्तप - श्रीमद्भवद्गीता
हे परंतप अर्जुन ! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अत्यंत श्रेष्ठ है।

८. न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते - श्रीमद्भगवद्गीता
इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला नि: सन्देह कुछ भी नहीं है।

९. श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्पर: संयतेन्द्रिय: - श्रीमद्भगवद्गीता
जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है।

१०. युक्त: कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् - श्रीमद्भगवद्गीता
कर्मयोगी कर्मों के फल का त्याग करके भगवत् प्राप्तिरूप शान्ति को प्राप्त होता है।

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

अखण्डमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अर्थात् - उस गुरु को नमन है जिसने मुझे मेरे भीतर प्रभु का साक्षात्कार करवाया कि जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है। ईश्वर के तत्व रूप के मेरे भीतर प्रकट कर मुझे दर्शन करा दे, उस श्री गुरु को मेरा नमन है।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्न आसुव.... (ऋग्वेद)

अर्थात् - हे सूर्य देव ! हमारे समस्त पापों को दूर करें तथा जो हमारे लिए शुभ मंगलकारक हैं उसे हमें प्रदान करें।

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।।
गीता ६/८

अर्थात् - जिसमें न तो सत्य हो, न ही तप हो एवं उसकी इन्द्रियां भी उसके वश में न हों, साथ ही सभी प्राणियों के प्रति उसमें दयाभाव भी न हो वह चाण्डाल कहा जाता है।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥
(श्रीमद्भगवद्गीता- ९/२७)

अर्थात् - श्री भगवान् ने कहा- हे अर्जुन ! तुम जो कर्म करते हो, जो खाते हो, जो हवन करते हो, जो दान देते हो और जो तप करते हो, वह सब मुझे अर्पण करो।

शुष्केणैकेन वृक्षेण वनं पुष्पितपादपम् ।
कुलं चारित्रहीनेन पुरुषेणेव दह्यते ।।
(पञ्चरात्र - ०१/१२)

अर्थात् - जिस प्रकार एक शुष्क वृक्ष फूलों से लदे पेड़ों वाले वन को भी जला डालता है उसी प्रकार एक चरित्रहीन व्यक्ति पूरे कुल को जला डालता है (पतन की ओर ले जाता है)।

मधुरं संस्कृतम् / वदतु संस्कृतम् - १६

" मम शरीरम् "

१. शिर: = सिर
२. ललाटम् = माथा/ मस्तक
३. कटि: = कमर
४. कर्ण: = कान
५. स्कन्ध: = कन्धा
६. गल: = गर्दन / गला
७. हस्त: = हाथ
८. उदरम् = पेट
९. पाद: = पैर
१०. भ्रू: = भौंह

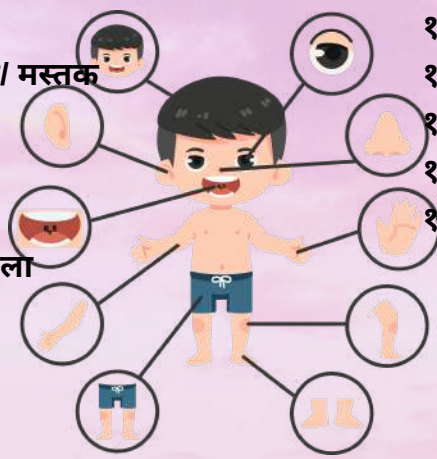

११. मुखम् = मुँह
१२. ओष्ठौ = दोनों ओंठ
१३. कपोल: = गाल
१४. नासिका = नाक
१५.नयनम् = आँख

ऋतूनां कुसुमाकरः - ऋतुओं में मैं वसन्त हूँ...

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।।

- श्रीमद्भगवद्गीता १०/३५

श्रीमद्भगवद्गीता के दसवें अध्याय के पैंतीसवें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि गायन करने योग्य श्रुतियों में मैं बृहत्साम और छन्दों में गायत्री छन्द हूँ तथा महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में मैं वसन्त ऋतु हूँ ।

वसंत ऋतु भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण ऋतु है, जो फरवरी से अप्रैल तक रहती है। यह ऋतु प्रकृति की नई जीवन और सुंदरता का प्रतीक है। वसंत ऋतु के आगमन से प्रकृति में नई जीवनी शक्ति का संचार होता है। पेड़-पौधे नए पत्तों और फूलों से सज जाते हैं। वातावरण में मधुर गंध और संगीतमय ध्वनियाँ गूंजने लगती हैं। यह ऋतु प्रकृति की सुंदरता और विविधता का अनुभव करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती है। वसंत ऋतु का महत्व भारतीय संस्कृति में बहुत अधिक है। यह ऋतु नए जीवन और नई आशाओं का प्रतीक है। इस ऋतु में लोग अपने घरों को साफ-सुथरा करते हैं और नए कपड़े पहनते हैं। वसंत ऋतु के दौरान कई त्योहार और उत्सव मनाए जाते हैं, जैसे कि होली, वसंत पंचमी और बैसाखी। वसंत ऋतु का प्रभाव हमारे जीवन पर भी पड़ता है। यह ऋतु हमें नई ऊर्जा और उत्साह से भर देती है। हमारे मन में नई आशाएं और सपने जगते हैं। वसंत ऋतु के दौरान हम अपने जीवन को नए सिरे से शुरू करने का प्रयास करते हैं।

वसंत ऋतु एक महत्वपूर्ण ऋतु है जो प्रकृति की सुंदरता और विविधता का अनुभव करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती है। यह ऋतु नए जीवन और नई आशाओं का प्रतीक है और हमें नई ऊर्जा और उत्साह से भर देती है। हमें वसंत ऋतु का सम्मान करना चाहिए और इसकी सुंदरता का आनंद लेना चाहिए।

- नयना खाती, ९ अ

हमारे देश की सुन्दर प्राकृतिक ऋतुएं ...

भारत में छह ऋतुएं होती हैं - वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर। इन मौसमों में से प्रत्येक की अपनी विशेषताएं और आकर्षण होते हैं। वसंत मौसम में पेड़ों पर नए पत्ते आते हैं और फूल खिलते हैं। यह मौसम बहुत ही सुंदर और आकर्षक होता है, जब पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं और वातावरण में एक नई ऊर्जा और जीवन आता है। वसंत मौसम में लोग पिकनिक मनाने और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए बाहर निकलते हैं। ग्रीष्म मौसम में तापमान अधिक होता है और लोग गर्मी से बचने के लिए पानी पीते हैं। यह मौसम बहुत ही गर्म और शुष्क होता है, जब सूरज की किरणें बहुत ही तेज होती हैं और वातावरण में एक गर्मी और उमस का माहौल बन जाता है। ग्रीष्म मौसम में लोग गर्मी से बचने के लिए कई उपाय करते हैं, जैसे कि पानी पीना, छाया में रहना, और हल्के कपड़े पहनना। वर्षा मौसम में बारिश होती है और पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। यह मौसम बहुत ही सुंदर और आकर्षक होता है, जब बारिश की बूंदें पेड़ों की पत्तियों पर गिरती हैं और वातावरण में एक नई ऊर्जा और जीवन आता है। वर्षा मौसम में लोग बारिश का आनंद लेते हैं, जब वे बारिश में नहाते हैं, बारिश की बूंदों को देखते हैं, और बारिश की खुशबू का आनंद लेते हैं। शरद मौसम में तापमान कम होने लगता है और लोग गर्म कपड़े पहनने लगते हैं।

- लारन्या बिष्ट ७ ब

यह मौसम बहुत ही सुंदर और आकर्षक होता है, जब पेड़ों की पत्तियां पीली और लाल होने लगती हैं और वातावरण में एक नई ऊर्जा और जीवन आता है। शरद मौसम में लोग शरद ऋतु का आनंद लेते हैं, जब वे पेड़ों की पत्तियों को देखते हैं, शरद ऋतु की खुशबू का आनंद लेते हैं, और शरद ऋतु के त्योहारों में भाग लेते हैं। हेमंत मौसम में सर्दी अधिक होती है और लोग गर्म कपड़े पहनते हैं। यह मौसम बहुत ही ठंडा और शुष्क होता है, जब सूरज की किरणें बहुत ही कमजोर होती हैं और वातावरण में एक ठंडी और शुष्कता का माहौल बन जाता है। हेमंत मौसम में लोग सर्दी से बचने के लिए कई उपाय करते हैं, जैसे कि गर्म कपड़े पहनना, गर्म पेय पदार्थ पीना, और गर्म स्थानों पर रहना। शिशिर मौसम में सबसे अधिक सर्दी होती है और लोग घरों में रहते हैं। यह मौसम बहुत ही ठंडा और शुष्क होता है, जब सूरज की किरणें बहुत ही कमजोर होती हैं और वातावरण में एक ठंडी और शुष्कता का माहौल बन जाता है। शिशिर मौसम में लोग सर्दी से बचने के लिए कई उपाय करते हैं।

- वान्या ७ स

ग्रीष्म ऋतु ...

ग्रीष्म ऋतु भारत के छः ऋतुओं में से एक है। यह ऋतु फाल्गुन के माह से शुरू होती है और जेष्ठ के माह तक रहती है इस ऋतु में हम गर्मी से बचने के लिए कूलर एसी पंखे का उपयोग करते हैं। ठंडी ठंडी आइसक्रीम कुल्फी आदि खाने में बहुत आनंद आता है। इस ऋतु में हम छुट्टियों में नानी के घर जाते हैं और झील व पूल में मजे करते हैं। इस ऋतु में हम आम खाते हैं और गन्ने शिकंजी के जूस पीते हैं। इस ऋतु में दिन लंबे और रात छोटी हो जाती है। गर्मी के दिनों में हमारे शरीर को पानी की कमी और लू से बचने के लिए अधिक पानी पीना चाहिए।

- जैनब - ६ अ

ये मौसम माँ को बहुत सुहाए...

हमारे देश में छह ऋतुएँ होती हैं, जो बारी-बारी से आती हैं और अपनी सुषमा सर्वत्र बिखरा जाती हैं। प्रकृति भारत पर खूब दयालु रही है। उसने हमारे देश को अनेक बार बहुत दान दिए हैं। इन वरदानों में एक अद्भुत वरदान है-यहाँ की ऋतुएँ। हमारे देश में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं, जो बारी-बारी से आती हैं और अपनी सुषमा सर्वत्र बिखरा जाती हैं। छः ऋतुओं के नाम निम्नलिखित हैं -

ग्रीष्म ऋतु , वर्षा ऋतु , शरद ऋतु , शिशिर ऋतु , हेमंत ऋतु , वसंत ऋतु ।

ग्रीष्म ऋतु – इस ऋतु को गरमी की ऋतु भी कहा जाता है। भारतीय महीनों के अनुसार, यह ऋतु जेठ महीने में होती है। इस समय खूब गरमी पड़ती है। धूप बहुत तेज़ हो जाती है। तालाब, पोखर, नाले और छोटी नदियाँ सूख जाती हैं। इस समय हरियाली गायब हो जाती है। पशु-पक्षी, मनुष्य और अन्य जीवधारी बेहाल हो जाते हैं। वे वर्षा के लिए आसमान की ओर निहारते नज़र आते हैं।

वर्षा ऋतु – यह ऋतु ग्रीष्म ऋतु के बाद आती है। इसका काल आषाढ़, सावन और आधा भादों का महीना होता है। इसे 'जीवनदायिनी ऋतु' और 'ऋतुओं की रानी' भी कहा जाता है। आषाढ़ माह में तपते मौसम के बीच अचानक बादल छा जाते हैं, शीतल हवा बहने लगती है, बिजली चमकने लगती है और वर्षा शुरू हो जाती है। इससे धरती को हरियाली और प्राणियों को जीवन मिलता है। इस समय खेतों में फ़सलें लहराने लगती हैं और नदी-नाले तालाब-पोखर पानी से भर जाते हैं। प्रकृति में सर्वत्र उल्लास का वातावरण बन जाता है।

शरद ऋतु - यह ऋतु मुख्यतया क्वार और आधे कार्तिक मास में होती है। इस समय तक गरमी बिलकुल कम हो चुकी होती है। आसमान से काले बादल गायब हो चुके होते हैं। जो होते भी हैं वे थोथे होते हैं। वे गरजते तो हैं, पर बरसने की क्षमता नहीं होती है। धरती पर सर्वत्र हरियाली दिखाई देती है। रास्तों का कीचड़ सूख चुका होता है। अधिक बरसात के कारण जो नदी – नाले अपनी सीमा लाँघ गए थे वे अपनी सीमा में लौट आते हैं। यह काल गरमी और सरदी का संधि काल होता है। इस समय का मौसम गुलाबी होती है- यह ऋतु स्वास्थ्य के अनुकूल होती है।

शिशिर ऋतु – कार्तिक और अगहन महीना इस ऋतु का काल माना जाता है। इस ऋतु में सरदी बढ़ने लगती है। इसी समय दीपावली तथा अन्य त्योहार मनाए जाते हैं। इसी समय खरीफ की फ़सलें पककर कटने को तैयार होती हैं तथा रबी की फ़सल की बुवाई करने की तैयारी की जाती है। इस ऋतु में आसमान प्रायः स्वच्छ होता है। इस ऋतु में आसमान साफ़ रहता है।

हेमंत ऋतु – इस ऋतु का काल पूस और माघ माना जाता है। इस समय दाँत किटकिटा देने वाली सरदी पड़ती है। गरीबों का जीवन ऐसे में मुश्किल हो जाता है। पहाड़ी भागों में इस समय खूब बरफ़ पड़ती है। मैदानी भागों में कभी-कभी पाला पड़ता है। इस ऋतु में रंग-बिरंगे कपड़े पहने लोग दिखाई देते हैं। रूस साइबेरिया जैसे स्थानों पर बरफ़ पड़ने के कारण विदेशी पक्षी हमारे आसपास दिखाई पड़ते हैं। इसी समय अनेक पेड़ अपनी पत्तियाँ गिराकर दूंठ से नज़र आते हैं।

वसंत ऋतु – वसंत को 'ऋतुराज' की संज्ञा दी जाती है। यह सबसे सुंदर और सुहानी ऋतु मानी जाती है। इस ऋतु का काल फागुन और चैत महीने माने जाते हैं। इस समय धरती का प्राकृतिक सौंदर्य निखर उठता है। चारों ओर फूल खिल जाते हैं और पेड़ों पर नई पत्तियाँ और कलियाँ आ जाती हैं। हवा में मादकता भर जाती है। यह ऋतु प्राणियों को हर्षोल्लास से भर देती है। आमों पर बौर आया देख कोयल मतवाली हो जाती है और कूकती फिरती है। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ इतना ऋतु वैविध्य है। यहीं ऋतुओं का ऐसा अद्भुत सौंदर्य दिखाई देता है। हमें ऋतुओं का स्वागत करने को तैयार रहना चाहिए।

कोयल गाए मधुर तराना, वसंत ऋतु जब आए ,
पेड़ पौधे फूल पत्तियां, माँ को बहुत सुहाए ।
ग्रीष्म ऋतु में तपता सूरज, देखो आँख दिखाए ,
कोई ठंडा शरबत पीता, डुबकी कोई लगाए ।
वर्षा ऋतु में छाता भाए , ठंडी बौछारों से बचाए ,
कागज की जब नाव चले, बिटिया गदगद हो जाए।
ऋतु शरद की पूनम आई, चांद बहुत मुस्काए ,
शीतलता नभ से बरसे हैं, मन की प्यास बुझाए ।
ऋतु हेमंत की बेला के संग, मंद हवा ने ठंड बढ़ाई,
स्वेटर पहनो, टोपी पहनो सारे उड़ो गरम रजाई ।
ऋतु शिशिर ने करी घोषणा, पतझड़ आया पतझड़ आया,
तेज हवा ने तब झकझोरा, पेड़ों से पत्तों को झड़ाया।

- सृष्टि शर्मा ७ ब

ऋतुसंहारम् ... महाकवि कालिदास (छः ऋतुएं)

प्रिय विद्यार्थियों ! तथा संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका ज्योतिर्गमय के सम्मानित पाठकों ! ई. पूर्व (B.C) दूसरी शताब्दी महाकवि कालिदास का समय माना जाता है। महाकवि कालिदास ने तीन नाटकों (अभिज्ञानशाकुन्तलम् , मालविकाग्निमित्रम् , विक्रमोर्वशीयम्) दो महाकाव्यों (रघुवंशम् और कुमारसम्भवम्) एवं दो गीतिकाव्यों (मेघदूतम् और ऋतुसंहारम्)की रचना की है जो विश्व में विख्यात है। महाकवि कालिदास ने मनोयोग से काव्य का आरम्भ ऋतुवर्णनपरक इस लघु काव्य ऋतुसंहारम् से किया है।
इसमें १९७ श्लोक हैं जो ६ सर्गों में विभक्त हैं। ग्रीष्म ऋतु से प्रारम्भ करके भारतवर्ष की प्रधान छः ऋतुओं का एक- एक सर्ग में सुन्दर प्राकृतिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। मेरा प्रयास है कि हर ऋतु का एक- एक श्लोक अर्थ सहित आपके सामने प्रस्तुत करूं, जिससे आप अपने विरासत से अवगत हो सकें। अधिक जानकारी के लिए महाकवि कालिदास द्वारा रचित ऋतुवर्णन की पुस्तक ऋतुसंहारम् देख सकते हैं और पढ़ सकते हैं।

ग्रीष्म- ऋतु - वर्णनम् :-

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षमवारिसञ्चयः।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये ।।

अर्थात् : लो प्रिये ! गर्मी के दिन आ गए हैं, धूप बड़ी कड़ी हो गई है और चन्द्रमा बड़ा सुहावना लगने लगा है। कोई चाहे तो आज- कल दिन-रात गहरे जल में स्नान किया जा सकता है। इन दिनों सांझ बड़ी लुभावनी होती है और कामदेव तो एक दम ठंडा पड़ गया है।

वर्षा - ऋतु - वर्णनम् :-

ससीकराम्भोपरमत्तकुञ्जरस्तडित्पताकोऽशनिशब्दमर्दलः।
समागतोराजवदुध्दतद्युतिर्धनागम कामिजनप्रियः प्रिये ।।

अर्थात् : देखो प्यारी ! जल की फुहारों से भरे हुए बादलों के मतवाले हाथी पर चढ़ा हुआ, चमकती हुई बिजलियों की झंडियों को फहराता हुआ और बादलों की गरज के नगाड़े बजाता हुआ यह कामियों का प्यारा पावस राजाओं का- सा ठाट -बाट बनाए यहाँ पहुचा है।

शरद् - ऋतु - वर्णनम् :-

काशांशुका विकचपद्ममनोज्ञवक्त्रा सोन्मादहंसरवनूपुरनादरम्या ।
आपक्वशालिरुचिरानतगात्रयष्टिः प्राप्ता शरन्नववधूरिव रूपरम्या ।।

अर्थात् : लो फूले हुए कांस की साड़ी पहने, मस्त हंसों की बोली के से झनझनाते हुए सुहावना पायल पहने, पके हुए धान के मनोहर शरीरवाली और खिले हुए कमल के सुंदर मुखवाली शरद् ऋतु, नई ब्याही हुई रूपवती बहू के समान अब आ पहुँची है।

हेमन्त- ऋतु - वर्णनम् : -

नवप्रवालोद्गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः।
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतोऽयम् ।।

अर्थात् : देखो पाला बिछाती हुई यह हेमन्त ऋतु आ पहुंची है। जिसमें गेहूं जौ आदि के नए-नए अंकुरों के निकल आने से चारों ओर हरा-भरा दिखाई देने लगा है। लोध के पेड़ फूलों से लद गए हैं। धान पक चला है और कमल के फूल दिखाई नहीं देते।

शिशिर- ऋतु - वर्णनम् :-

प्ररूढशालीक्षुचयावृतक्षितिं क्वचित्सिथतक्रौंचनिनादराजितम् ।
प्रकामकामं प्रमदाजनप्रियं वरोरु कालं शिशिराह्वयं श्रृणु।।

अर्थात् : हे सुंदर नारी ! सुनो जिस ऋतु में धान और ईख के खेत लहलहा उठते हैं, जिसमें कभी-कभी सारस की बोली भी गूँज जाती है और काम ही बहुत बढ़ जाता है, वह स्त्रियों की प्यारी शिशिर ऋतु अब आ पहुँची है।

वसन्त - ऋतु - वर्णनम् :-

प्रफुल्ललूताङ्कुरतीक्ष्णसायको द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः।
मनांसि भेत्तुं सुरतप्रसङ्गिनां वसन्तयोद्धा समुपागतः प्रिये ।।

अर्थात् : लो प्यारी ! फूले हुए आम की मंजरियों के पैने बाण लेकर और अपने धनुष पर भौंरों की पांतों की डोरी चढ़ाकर यह वीर वसंत संभोग करनेवाले रसिकों को बेधने आ पहुँचे हैं।

संकलन - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

अद्भुत और अद्वितीय है भारत की छह ऋतुएं...

वसंत , ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर

वसन्त ऋतु फरवरी से मार्च तक होती है। अन्य देशों में यह अलग समयों पर हो सकती है। इस ऋतु की विशेषता है कि मौसम का गरम होना, फूलों का खिलना, पौधों का हरा भरा होना और बर्फ का पिघलना।

ग्रीष्म ऋतु अप्रैल से जुलाई तक होती है। ज्येष्ठ और आषाढ के महीने में ग्रीष्म ऋतु होती है। इन मासों में सूर्य की किरणें इतनी तेज होती हैं कि प्रातःकाल में भी उन्हें सहन करना सरल नहीं होता। सूर्य के पृथ्वी के निकट आ जाने से यह ऋतु उत्पन्न होती है।

वर्षा ऋतु भारत की ऋतुओं में से वर्ष की सबसे अधिक प्रतीक्षित ऋतु है। पूरे भारत में वर्षा ऋतु की शुरुआत गर्मी के बाद जुलाई से होकर सितम्बर तक चलती है। शरद ऋतु जिसे फाल भी कहा जाता है, ग्रीष्म और शीत ऋतु के बीच का संक्रमणकालीन ऋतु है। यह आमतौर पर उत्तरी गोलार्ध में सितम्बर में और दक्षिणी गोलार्ध में मार्च में शुरू होता है। शरद ऋतु के दौरान, तापमान धीरे-धीरे गर्मी से ठंडा हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कुरकुरे ठंडे दिन और सर्द रातें होती हैं।

हेमन्त ऋतु शीतकाल में आने वाली एक ऋतु है। यह उन छह भारतीय ऋतुओं में से एक है जो ठंडे महीनों का स्वागत करती है। इस अवधि के दौरान, ठंडी जलवायु की स्थिति बनी रहती है । पारंपरिक हिंदू कैलेंडर के अनुसार, हेमंत ऋतु 'मार्गशीर्ष' और 'पौष' मास के दौरान प्रबल होती है। शिशिर ऋतु का प्रवेश २१ दिसंबर मध्य रात्रि को हो जाता है और यह फरवरी तक जारी रहता है। फरवरी से बसंत ऋतु का आगमन हो जाता है। और इस तरह से शीत ऋतु को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। हेमंत ऋतु को हल्की गुलाबी ठंड के रुप में जाना जाता है तो वहीं शिशिर को कड़ाके की ठंड के रुप में जाना जाता है।

- दिव्यांश शर्मा, ७ अ

भारतीय छः ऋतुएं

१. ग्रीष्म - ग्रीष्म ऋतु में गर्मी चरम पर होती है , इस ऋतु में दिन लंबे ओर रात छोटी होती है।

२. वर्षा - वर्षा ऋतु में बारिश होती है ओर धरती को ठंडक मिलती है।

३. शरद् - शरद् ऋतु में मौसम ठंडा होने लगता है, इस ऋतु में करवाचौथ, नवरात्रि, दुर्गा - पूजा , दशहरा ओर दीपावली जेसे त्योहार होते हैं।

४. हेमंत - हेमंत ऋतु में सर्दी बढ़ने लगती है ओर दिन छोटे होने लगते हैं।

५. शिशिर - शिशिर ऋतु मे ज्यादा सर्दी पड़ती है ओर जन- जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

६. वसंत - वसंत ऋतु में नर्म हवाओं ओर फूलों की महक से वातावरण सुगंधित हो जाता है।

ऋतुओं का हमारे जीवन में महत्व है। ऋतुओं के कारण प्रकृति में लगातार बदलाव होता रेहता है । ये बदलाव पेड़-पौधों, जानवरों ,कृषि, ओर मनुष्य की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं।

- कृतिका गुसाई, ६ ब

लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु / हमारे जीवन की पहचान है लोक- संस्कृति और लोक- गीत

उत्तराखंड के लोकपर्व, लोकगीत और लोक संस्कृति यहाँ के जनजीवन की पहचान है। हमारे लोकपर्व और लोकगीतों से जीवन को प्रेरणा मिलती है। यह बात रविवार (१६ मार्च २०२५)को हिंदी साहित्य समिति देहरादून की ओर से हिंदी भवन में आयोजित लोकपर्व फूलदेई और होली मिलन समारोह के दौरान बतौर मुख्य अतिथि राज्य सूचना आयुक्त योगेश भट्ट ने कही। उन्होंने हिंदी साहित्य समिति को साहित्यिक कार्यक्रम के साथ ही लोक संस्कृति पर आधारित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी। विशिष्ट अतिथि पूर्व राज्य सूचना आयुक्त विवेक शर्मा ने कहा कि साहित्य के साथ ही लोकगीत और लोकसंस्कृति के संरक्षण का कार्य समाज को जागरूक करता है। हिंदी साहित्य समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर राम विनय सिंह ने कहा कि समिति का यही उद्देश्य है कि हम साहित्य के माध्यम से हिंदी के साथ ही उत्तराखंड की सभी क्षेत्रीय भाषाओं और देववाणी संस्कृत के सम्बर्धन में सहयोग करें। इसके बाद होली और लोक पर्व फूलदेई पर गीतों की प्रस्तुति दी गई।

मानव भारती देहरादून के संस्कृत शिक्षक तथा हिन्दी साहित्य समिति देहरादून के आजीवन सदस्य डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी ने संस्कृत भाषा में होली- गीतम् सुनाकर श्रोताओं को खूब झुमाया। डॉ. नीता कुकरेती ने गढ़वाली और ब्रजभाषा में, डॉक्टर उषा झा ने मैथिली, ज्योति झा ने भोजपुरी में, शिवचरण शर्मा ने हरियाणवी, जसवीर हलदर ने देहाती लय में होली के गीत गाए। अरुण भट्ट ने डॉ. गिरजाशंकर त्रिवेदी के होली गीतों की संगीतमय प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी साहित्य समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर रामविनय सिंह ने की तथा सुललित संचालन महामंत्री हेमवती नंदन कुकरेती ने किया। इस अवसर पर कविता विष्ट, ममता जोशी, क्षमा कौशिक, मोनिका अरोड़ा, शकुंतला ईष्टवाल, झरना माथुर, पुष्पलता ममगाईं अशोक शर्मा, जयकुमार भारद्वाज, नीलम, प्रभा वर्मा, अनिल शास्त्री आदि ने लोकगीत प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वसन्तोत्सव के उपलक्ष में होली मिलन समारोह एवं उत्तराखण्ड के प्रकृति पर्व फूलदेई के आयोजन अवसर पर फूलों की होली खेली गई। आप सभी को वसन्तोत्सव तथा होली के साथ प्रकृति पर्व फूलदेई की बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

आचार्य - वासुदेवद्विवेदिशास्त्रि - जन्मजयन्ती- महोत्सवः

परमश्रद्धेयपण्डितवासुदेवद्विवेदिशास्त्रिगुरुवर्याणां द्वादशोत्तरैकशततमे (११२) जन्मजयन्तीमहोत्सवे रङ्गभर्यामेकादश्यां समायोजितकार्यक्रमस्याध्यक्षं पद्मश्रीअभिराजराजेन्द्रमिश्रैर्मुख्यातिथित्वमाचार्यरहसविहारिद्विवेदिभिर्व्यभूषि। अत्र आचार्यकृष्णकान्तशर्मगुरूणां सार्वभौमयोगदानवक्तृत्वं , डा सदानन्दत्रिपाठिनां डॉ. राजेशमिश्राणां संस्कृतसेवासम्मानपत्रार्पणेन सभाजनं समपद्यत। संस्कृतगीतकाव्यगायनं डॉ. पंकजझाशम्भुत्रिपाठिमञ्जरीपाण्डेयादिभिः, स्वागतभाषणमाचार्यशरदिन्दुत्रिपाठिना, सुललितं सञ्चालनं डॉ. अनन्तमणित्रिवेदिना धन्यवादवचश्चाचार्यधर्मदत्तचतुर्वेदिना, संयोजनं डॉ. अरविन्दतिवारिणा विहितम् । अनेकसार्वभौमविदुषामुपस्थित्या गौरवान्वित एष समारोहोजायत ।

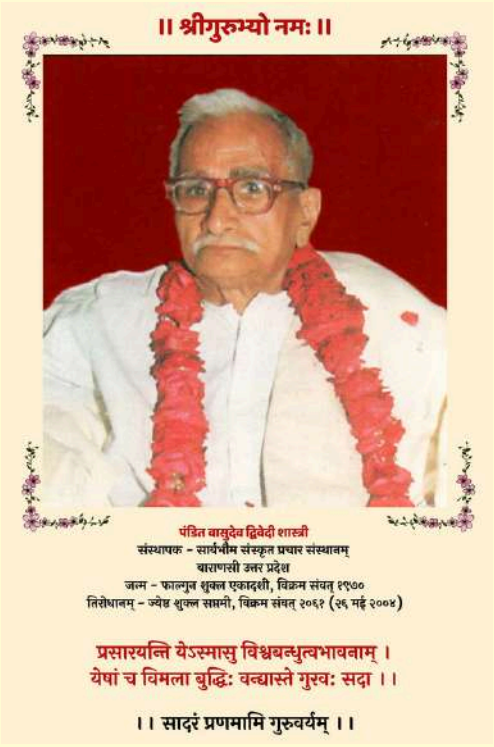

होली के शुभ अवसर पर हर रंग से जुड़ी अच्छाई को अपनाएं और बुराई का त्याग करें

लाल - उत्साह / हिंसा
पीला - ज्ञान / कायरता
नीला - विश्वास / अवसाद
संतरी - आनन्द / आक्रमकता
बैंगनी - धन / अहंकार
हरा - ताजगी / ईर्ष्या
काला - शक्ति / विद्रोह

गुलालं सुमनो गन्धं चन्दनं शुभकर्मणाम् ।
रञ्जयामि जगत्सर्वं होलीपर्व शुभं भवेत् ।।

गुलाल, फूलों की सुगन्ध और चन्दन से पूरे संसार को रंगीन करने का यह पुण्य पावन पर्व होली शुभ हो ।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु....

रंगोत्सव शुभ पर्व होली प्रकृति पर्व फूलदेई की हार्दिक मंगलमय शुभकामनाएं

- डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

नयना खाती **नक्श खाती**

आत्मानं विद्धि

Manava Bharati School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, (Dr. Anantmani Trivedi - 7351351098)
मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।
संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी, डिजाइन - विशाल लोधा